मुद्रा : अर्थ, कार्य एवं महत्व
(Money : Meaning, Functions and Importance)

मुद्रा का आविष्कार मानवीय आविष्कारों में सबसे महत्वपूर्ण है। ज्ञान की प्रत्येक शाखा में एक महत्वपूर्ण आविष्कार हुआ है। जैसे– यन्त्रकला (Mechanics) में पहिये का, विज्ञान में आग का, राजनीति शास्त्र में वोट का, उसी प्रकार अर्थशास्त्र तथा मनुष्य के सामाजिक जीवन के व्यापारिक पक्ष में मुद्रा एक महत्वपूर्ण आविष्कार है।

आदिकाल में मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर था। मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ उसने समूह में रहना सीखा। समूहों में रहते– रहते मनुष्यों ने अपनी रुचि, कौशल एवं क्षमता के आधार पर अलग–अलग व्यवसायों का चयन किया, जिनसे उनकी विभिन्न आवश्यकताऐं पूरी होने लगी। प्रारम्भिक काल में समूह छोटे होने के कारण मनुष्य अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का लेन–देन सहज और सरल रूप में करने लगे। वस्तु के बदले वस्तु खरीदने–बेचने की इस व्यवस्था को वस्तु विनिमय प्रणाली कहा जाता है।

वस्तु विनिमय प्रणाली

वस्तु विनिमय प्रणाली के अन्तर्गत दो व्यक्तियों द्वारा परस्पर स्वयं के द्वारा उत्पादित अतिरिक्त वस्तु अथवा सेवा का लेन–देन किया जाता था। प्राचीन काल में मनुष्य केवल प्राथमिक व्यवसाय में ही संलग्न था, जैसे – कृषि, पशुपालन, मछली पालन व आखेट इत्यादि। अतः सामान्यतः अनाज के बदले वस्त्र, वस्त्र के बदले दूध, दूध के बदले अनाज अथवा पालतू पशुओं का भी क्रय–विक्रय इस प्रणाली के माध्यम से किया जाता था। यह व्यवस्था पूर्णतः आपसी समझ एवं विश्वास पर आधारित थी।

वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयाँ

मानव सभ्यताओं के विकास के साथ मनुष्यों के आर्थिक क्रिया कलाप बढ़ते चले गये और वस्तु विनिमय प्रणाली में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न होने लगी, जिसके कारण इसका लोप हो गया। फलस्वरूप इसका स्थान मुद्रा व्यवस्था ने ले लिया। आइये कुछ प्रमुख कठिनाइयों को समझने का प्रयास करते हैं –

(1) दोहरे संयोग की कठिनाई :–

बाजार में वस्तु विनिमय तभी संभव हो सकता हैं जब दो व्यक्ति एक दूसरे के लिये उपयोगी वस्तुओं का लेन–देन करने हेतु तत्पर हों। ऐसा संयोग सदैव मिलना कठिन है। यदि एक किसान को अपने अतिरिक्त गेहूं के बदले चीनी खरीदनी हो तो उसे ऐसे व्यक्ति को तलाशना पड़ेगा जिसके पास अतिरिक्त चीनी विनिमय हेतु उपलब्ध हो, ऐसा संयोग आसानी से मिलना संभव हो यह आवश्यक नहीं होता था।

(2) वस्तु के मूल्य मापने में कठिनाई :–

विनिमय हेतु उपलब्ध अतिरिक्त वस्तु का मूल्य मापना कठिन कार्य हैं। लेन–देन अथवा विनिमय करने वाले दोनों व्यक्ति आपसी समझ एवं उपयोगिता के आधार पर वस्तुओं का विनिमय करते थे। वास्तव में प्रत्येक सौदे में वस्तुओं का नये सिरे से मोल–भाव करना अत्यन्त कठिन कार्य है।

(3) भावी बचत संभव नहीं :–

इस व्यवस्था में ऐसी वस्तुओं का भी लेन–देन होता था जिसका दीर्घकाल तक संचय करना कठिन होता था। विशेष तौर पर दूध, फल, सब्जियाँ आदि खाद्य पदार्थ भावी समय के लिए बचाकर नहीं रखें जा सकते। अतएव इस प्रणाली में अतिरिक्त उत्पादों की भावी बचत संभव नहीं थी।

(4) अविभाज्य वस्तु के विनिमय में कठिनाई :–

वस्तु विनिमय प्रणाली में प्रायः वस्तु विभाजन की समस्या भी उत्पन्न हो जाती थी। उदाहरण के लिए एक भैंस का विनिमय मूल्य चार बोरी गेहूँ हैं तो ऐसे में यदि किसान की जरूरत एक बोरी गेहूँ हैं तो वह अपनी भैंस (जो कि अविभाज्य है) को एक बोरी गेहूँ से विनिमय नहीं कर सकेगा।

(5) उधार के लेखे में कठिनाई :–

वस्तु विनिमय में सौदे तात्कालिक ही संभव हो पाते थे, यदि कोई व्यक्ति उधार रख कर वस्तु विनिमय के द्वारा प्राप्त करना चाहता था तो उधार रखी गई वस्तु की भावी कीमत कितनी होगी यह पता लगाना अत्यन्त कठिन कार्य था।

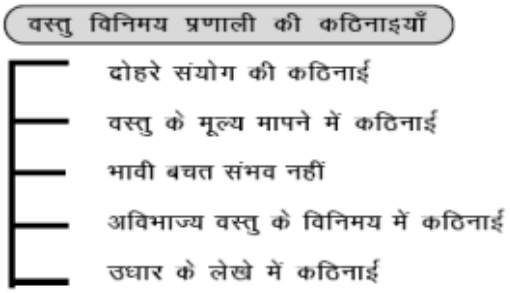

वस्तु विनिमय प्रणाली के अन्तर्गत उपरोक्त कठिनाइयों के कारण कालान्तर में इस व्यवस्था का लोप हो गया और मुद्रा का प्रादुर्भाव विनिमय के माध्यम के रूप में हुआ।

मुद्रा का प्रादुर्भाव

प्राचीन भारतीय इतिहास राजा–महाराजाओं का इतिहास रहा है। ऐसी राजव्यवस्था में समस्त आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों के अंतिम निर्णयकर्ता राजा हुआ करते थे। यहाँ तक कि वे अपनी मोहर (राजकीय चिन्ह) जिस धातु या वस्तु पर टंकित कर देते थे वह राजकीय मुद्रा का रूप धारण कर लेती थी। सिक्कों का चलन इसी प्रणाली के विकास को दर्शाता हैं। देशकाल और परिस्थिति के अनुसार सोने, चाँदी, ताँबे व काँसे के सिक्के चलाये गये। इस प्रकार जारी मुद्रा 'सर्वग्राह्यता' एवं 'वैधानिकता' के गुणों के साथ विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार की जाने लगी।

अर्थ एवं परिभाषा :–

मुद्रा को अंग्रेजी में मनी (Money) कहते हैं। इस 'MONEY' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'मोनेटा' (Moneta) शब्द से हुई हैं। मोनेटा 'देवी जूनो' (Goodess Juno) का दूसरा नाम है। प्राचीन रोम में देवी जूनो को स्वर्ग की रानी कहकर संबोधित किया जाता था। उनका विचार था कि 'देवी जूनो' स्वर्ग का आनन्द देने वाली देवी हैं, ठीक उसी प्रकार देवी जूनो के मंदिर में बनाई गई मुद्रा (सिक्का) भी स्वर्गीय सुखों को देने वाली है।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने 'मुद्रा' की परिभाषा भिन्न–भिन्न प्रकार से दी है। अतः एक सर्वमान्य परिभाषा को जानना कठिन कार्य है, फिर भी अपने अध्ययन को व्यापक बनाने की दृष्टि से हम कुछ विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को समझने का प्रयास करेंगे –

- हार्टले विदर्स :– ''मुद्रा वह सामग्री है, जिससे हम वस्तुओं का क्रय–विक्रय करते हैं।''
- नेप के अनुसार :– ''कोई भी वस्तु जो राज्य द्वारा मुद्रा घोषित कर दी जाती है, मुद्रा कही जाती है।''
- मार्शल के अनुसार :– ''मुद्रा में वे सब वस्तुएँ सम्मिलित की जाती हैं जो किसी विशेष समय अथवा स्थान में बिना संदेह या विशेष जाँच पडताल के वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदने तथा व्यय के भुगतान के साधन के रूप में, सामान्यतया स्वीकार की जाती हैं।
- सैलिगमैन के अनुसार :– ''मुद्रा वह वस्तु है जिसे सामान्य स्वीकृति प्राप्त हो।''
- किनले के अनुसार :– ''मुद्रा एक ऐसी वस्तु है, जिसे सामान्यतया विनिमय के माध्यम अथवा मूल्य के मान के रूप में स्वीकार एवं प्रयोग किया जाता है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात् हम मुद्रा के दो महत्वपूर्ण गुणों को मान सकते हैं, पहला – सामान्य स्वीकृति और दूसरा – वैधानिकता। इस प्रकार मुद्रा की सर्वमान्य परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है :–

मुद्रा एक ऐसी वस्तु है, जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, स्थापित भुगतानों के मान तथा मूल्यों के संचय के साधन के रूप में स्वतंत्र, विस्तृत तथा सामान्य रूप से लोगों द्वारा स्वीकार की जा सकती है।

भारतीय रिजर्व बैंक अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति के वैकल्पिक मापों को चार रूपों में प्रदर्शित करता हैं –

$M_1 = C + DD + OD$

$M_2 = M_1 +$ डाकघर, बचत बैंकों में बचत जमाऐं

$M_3 = M_1 +$ व्यावसायिक बैंकों की निवल आवधिक जमाऐं

$M_4 = M_3 +$ डाकघर बचत संस्थाओं में कुल जमाऐं

यहाँ DD–माँग जमाऐं व्यापारिक एवं सहकारी बैंकों के पास

C–लोगों के पास रखी करन्सी (नोट व सिक्के)

OD–रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाए

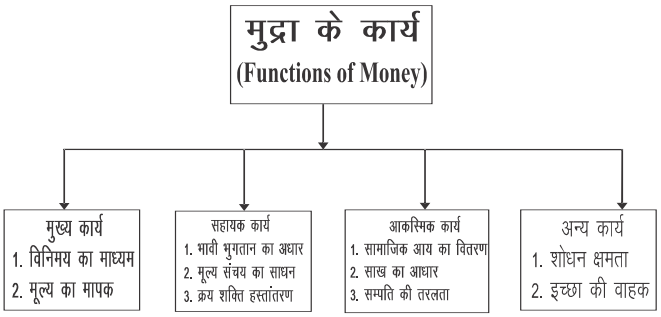

मुद्रा के मुख्य कार्य :– मुद्रा के मुख्य या प्राथमिक कार्य निम्नलिखित हैं –

1– विनिमय का माध्यम :–

यह एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जो इसकी प्रमुख पहचान भी है समस्त प्रकार के लेन–देन मुद्रा के माध्यम से ही सम्पन्न होते हैं क्योंकि मुद्रा में सर्वग्राह्यता का गुण विद्यमान होता है। बाजार में संव्यवहार प्रयोजन हेतु मुद्रा एक उपयुक्त माध्यम है।

2– मूल्य का मापक :–

यह दूसरा महत्वपूर्ण कार्य हैं। मुद्रा के माध्यम से ही वस्तु का मूल्य निर्धारण संभव होता हैं। वस्तु और सेवाओं के मूल्य मुद्रा के रूप में मापने से उनका विनिमय आसान हो जाता है। राष्ट्रीय आय की गणना भी सरल हो जाती है। व्यय विधि उत्पादन विधि और आय विधि द्वारा देश की राष्ट्रीय आय मुद्रा के रूप में सरलता से ज्ञात की जा सकती है।

- सहायक कार्य :– मुद्रा के सहायक कार्य, गौण कार्य अथवा

द्वितीयक कार्य ऐसे कार्य हैं जो आर्थिक सुगमता के लिए अब होने लगे हैं यद्यपि मुद्रा का आविष्कार इन कार्यों के लिए नहीं हुआ। ये सहायक कार्य इस प्रकार हैं –

1– भावी भुगतानों का आधार :–

ऐसे आर्थिक सौदे जिनका भुगतान भविष्य में किया जाना है तो मुद्रा ऐसे भावी भुगतानों के लिए आधार प्रदान करती है, अर्थात भविष्य में उस वस्तु की कीमत का अनुमान लगा लिया जाता है। अतः मुद्रा स्थगित भुगतान के आधार के रूप में भी कार्य करती हैं। जनता के विभिन्न प्रकार के ऋण जैसे – गृह ऋण, शिक्षा ऋण, उद्यम ऋण आदि का लेनदेन आसान हो जाता है। इसी प्रकार शेयर, डिबेन्चर और प्रतिभूतियों को खरीदना व बेचना भी मुद्रा के द्वारा सरल हो जाता है। मुद्रा एवं पूंजी बाजार का विकास संभव हो पाता है, जो एक अर्थ व्यवस्था को सुदृण बनाने के लिए आवश्यक होता है।

2– मुद्रा मूल्य संचय का साधन :–

मुद्रा के माध्यम से किसी ऐसी वस्तु जिसका टिकाऊपन कम है, बेचकर उसके मूल्य को भविष्य के लिए संचित कर रखा जा सकता हैं। मूल्य संचय तथा बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हो पाता है। मुद्रा द्वारा क्रय की गयी जमीन, मकान, सोना, चांदी एवं बॉण्ड इत्यादि के रूप में मुद्रा का संचय किया जा सकता है। यद्यपि कभी–कभी मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन होने पर लाभ व हानि की आशंका बनी रहती है।

3– क्रय शक्ति हस्तांतरण :–

मुद्रा के द्वारा एक व्यक्ति अपने द्वारा संचित क्रय शक्ति को आसानी से दूसरे व्यक्ति को हस्तांतरित कर सकता है। इस प्रकार मुद्रा क्रय शक्ति हस्तांतरण के साधन के रूप में भी कार्य करती है। एक व्यक्ति नकद रूप में मुद्रा दूसरे व्यक्ति को सौंप कर क्रय शक्ति का हस्तान्तरण भी कर सकता है। आज के समय में नकदी विहीन अर्थव्यवस्था में कोई भी व्यक्ति डेबिट, क्रेडिट, एटीम अथवा चैक इत्यादि के माध्यम से भी अपनी क्रय शक्ति अन्य व्यक्ति को हस्तान्तरित सरलता से कर सकता है। इसके अतिरिक्त एक व्यक्ति स्वंय की खरीदी गई परिसम्पत्तियों को दूसरे व्यक्ति को बेच कर भी क्रय शक्ति का हस्तान्तरण कर सकता है। इस प्रकार मुद्रा की सहायता से व्यक्तियों के मध्य एवं विभिन्न स्थानों के मध्य परिसम्पत्तियों का क्रय शक्ति हस्तान्तरण सरलता से संभव हो जाता है।

- आकस्मिक कार्य :– मुद्रा के द्वारा कुछ ऐसे आकस्मिक कार्य भी सम्पादित किये जाते हैं जो मुद्रा को और भी उपयोगी एवं सुविधाजनक माध्यम के रूप में सिद्ध करते हैं। ये इस प्रकार है :–

1– राष्ट्रीय आय का वितरण :–

वर्तमान युग में बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपभोग किया जाता है, जो कि मुद्रा के माध्यम से ही संभव है। राष्ट्रीय आय का अनुमान भी मुद्रा के मूल्य से लगाया जाता है तथा कुल उत्पादन से प्राप्त मूल्य का समाज के विभिन्न वर्गों को भुगतान भी मुद्रा से संभव है।

2– साख का आधार :–

बाजारीकरण के इस दौर में बैंको और वित्तीय संस्थाओं द्वारा अनेक प्रकार के ऋण उपलब्ध करवाये जाते हैं तथा जमाओं को भी स्वीकार किया जाता है। ये सभी कार्य मुद्रा के माध्यम से ही सम्पन्न हो सकते हैं।

3– सम्पति की तरलता :–

प्रो. जे. एम. कीन्स के अनुसार मुद्रा का एक महत्वपूर्ण कार्य पूँजी अथवा धन को तरल रूप प्रदान करना है। तरल रूप में मुद्रा का किसी भी कार्य में तत्काल प्रयोग किया जा सकता है।

- मुद्रा के अन्य कार्य :– मुद्रा के द्वारा उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त कुछ अन्य महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न किए जाते हैं, जो इस प्रकार हैं–

1– शोधन क्षमता सूचक :–

मुद्रा की उपलब्धता आर्थिक ऐजेंट (व्यक्ति या फर्म) की शोधन क्षमता की सूचक होती हैं। समाज में जिस भी किसी व्यक्ति के पास मुद्रा है उसके पास भुगतान करने की क्षमता (Pay to Ability) होती है।

2– मुद्रा इच्छा की वाहक :–

मुद्रा एक ऐसी वस्तु अथवा माध्यम है जो मनुष्य को अपनी इच्छानुसार आर्थिक निर्णय लेने में सहायता प्रदान करती है, मुद्रा की सहायता से व्यक्ति अपनी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। उपभोक्ता जिस वस्तु के लिये सबसे अधिक कीमत देने को तत्पर होता है। उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन बाजार में अधिक किया जाता है। इसीलिये पूँजीवाद में बाजार की प्रसिद्ध कहावत भी हैं – 'उपभोक्ता बाजार का राजा होता हैं।' (Consumer is the King to Market)

मुद्रा का महत्व (Importance of Money)

वर्तमान समय में मुद्रा आर्थिक परिक्षेत्र में एक महत्वपूर्ण घटक बन चुकी है। अतः मुद्रा के महत्व को हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं –

1. बाजार व्यवस्था की धुरी – आधुनिक समय में मुद्रा अर्थ व्यवस्था में विनिमय का सरल माध्यम है। अतः बाजार व्यवस्था में समस्त लेनदेन मुद्रा के माध्यम से किये जाते है।
2. आर्थिक विकास का मापक– मुद्रा देश की आर्थिक उन्नति एवं विकास का मापक है। लोक हितकारी सरकारें

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करके विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

3. अर्थव्यवस्था की बचतों के निवेश परिवर्तन– अर्थ व्यवस्था में लोगों के द्वारा की जाने वाली बचतें मुद्रा के रूप में संग्रह करके बैंकों में जमा की जाती है जो भविष्य में निवेश का आधार बनती है।
4. श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण– मुद्रा के माध्यम से देश में श्रम विभाजन व विशिष्टीकरण करके उत्पादन का उच्चतम स्तर प्राप्त किया जाता है जो मुद्रा से संभव हुआ है।
5. आर्थिक जीवन में स्वतंत्रता– मुद्रा के प्रयोग से उपभोक्ता एवं उत्पादक दोनों ही बाजार में विवेकानुसार निर्णय लेने में हेतु स्वतंत्र होते है।
6. सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार – मुद्रा अर्थ व्यवस्था में आर्थिक स्वतंत्रता के साथ–साथ मूल्य संग्रह की सुविधा भी प्रदान करती है जो सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार बनती है।

उपरोक्त बिन्दुओं से स्पष्ट है कि मुद्रा का आर्थिक क्षेत्र में अत्यधिक महत्व है, किन्तु फिर भी कुछ अर्थशास्त्री मुद्रा के प्रचलन को नियंत्रण में रखने की सलाह देते हैं क्योंकि अनियंत्रित होने पर यह मुद्रा स्फीति का कारण बनती है जिसके अर्थव्यवस्था को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं, इसलिए किसी विद्वान ने ठीक ही कहा हैं कि ''मुद्रा एक अच्छी सेविका किन्तु बुरी स्वामिनी है।''

विमुद्रीकरण (Demonatization) -

एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत देश का केन्द्रीय बैंक कालेधन अथवा नकली नोटों को चलन से बाहर करने के लिए चलन में पुरानी मुद्रा की वैधानिकता समाप्त कर नयी मुद्रा जारी कर देता है इस प्रकार अवैध तरीके से अर्जित कालाधन एवं नकली करेंसी स्वतः ही नष्ट हो जाती है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- वस्तु के बदले वस्तु को खरीदना या बेचना वस्तु विनिमय कहलाता है।
- मुद्रा वह वस्तु है जिसे जनता द्वारा सामान्यतया विनिमय के माध्यम तथा मूल्य के मापक के रूप में स्वीकार किया जाता हो तथा समाज एवं सरकार उसे वैधानिक मान्यता देते हों।
- *मुद्रा के कार्य :–*

(1) मुख्य कार्य – विनिमय का माध्यम, मूल्य का मापक।
(2) सहायक कार्य – भावी भुगतानों का आधार, मूल्य संचय का साधन, क्रय शक्ति हस्तांतरण।
(3) आकस्मिक कार्य – सामाजिक आय का वितरण, साख का आधार, सम्पत्ति की तरलता।
(4) अन्य कार्य – इच्छा की वाहक, शोधन क्षमता सूचक।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न –

(1) निम्न में से M_2 ज्ञात कर सकते हैं।
(अ) M_1+ व्यावसायिक बैंकों की निवल आवधिक जमाऐं
(ब) M_3 + डाकघर बचत संस्थाओं में कुल जमाऐं
(स) C + DD
(द) M_1 + डाकघर बचत संस्थाओं में कुल जमाऐं

(2) निम्नलिखित में से कौन सा कार्य मुद्रा का मुख्य कार्य हैं–
(अ) विनिमय का माध्यम
(ब) नोटों का मापन
(स) बिलों का भुगतान
(द) साधनों की कार्य कुशलता

(3) मुद्रा का निम्न में से कौन सा कार्य नहीं हैं –
(अ) विनिमय का माध्यम (ब) मूल्य मापन
(स) साख का आधार (द) मूल्य स्थिरता

(4) वस्तु विनिमय की प्रमुख कठिनाई निम्न में से कौन सी है–
(अ) दोहरे संयोग का न मिलना
(ब) मुद्रा मूल्य ज्ञात न होना
(स) भावी बचत संभव न होना
(द) उपरोक्त सभी

(5) वस्तु के बदले वस्तु खरीदने की प्रक्रिया कहलाती हैं –
(अ) मुद्रा प्रणाली (ब) वस्तु मुद्रा प्रणाली
(स) वस्तु विनिमय प्रणाली (द) पत्र मुद्रा प्रणाली

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1– वस्तु विनिमय प्रणाली का अर्थ लिखिए।

2– मुद्रा को परिभाषित कीजिए।

3– मुद्रा के दो प्रमुख कार्यों को बताइये।

4– वस्तु विनिमय की कोई दो कठिनाइयाँ लिखिये।

5– मुद्रा उपभोक्ता को निर्णय का अधिकार किस प्रकार देती है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1– वस्तु विनिमय प्रणाली को एक उदाहरण देकर समझाइये।

2– मुद्रा के मूल्य से आप क्या समझते हैं।

3– वर्तमान युग में मुद्रा के महत्व को समझाइये।

4– मुद्रा के आकस्मिक कार्य कौन–कौन से हैं।

5– मुद्रा के दो सहायक कार्य लिखिये।

निबंधात्मक प्रश्न –

1– मुद्रा के प्रमुख कार्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2– वस्तु विनिमय प्रणाली क्या हैं?इस प्रणाली के दोषों का वर्णन कीजिए।

3– मुद्रा का अर्थ एवं परिभाषा स्पष्ट करदते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
द	अ	द	द	स